Anusanadhan: A Multidisciplinary International Journal (In Hindi)
Volume 8, Issue 1&2 - 2023, Pg. No. 29-31
Peer Reviewed Journal

Research Article

प्राचीन भारत के गुरुकुल में उच्च शिक्षा का स्वरूप और विकास

Rameshwar Pandey

Assistant Professor, Department of Ancient History, National PG College Barhalganj, Gorakhpur, Uttar Pradesh, India.
DOI: https://doi.org/10.24321/2456.0510.202302

I N F O

E-mail Id:
rameshwarnpg@gmail.com
Orcid Id:
https://orcid.org/0009-0001-2969-6174

Date of Submission: 2023-04-10
Date of Acceptance: 2023-05-18

सारांश

भारत के प्राचीन शैक्षणिक संस्थानों में जिन्हें गुरुकुल के नाम से जाना जाता है, उच्च शिक्षा की प्रकृति और विकास एक जटिल और गहरी जड़ें जमाने वाली प्रक्रिया थी जो आध्यात्मिक, दार्शनिक और व्यावहारिक शिक्षण पद्धतियों के विभिन्न तत्वों को आपस में जोड़ती थी। इन गुरुकुलों ने समग्र और गहन शैक्षिक अनुभव प्रदान करके प्राचीन भारत के बौद्धिक परिदृश्य को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जिसने न केवल बौद्धिक क्षमताओं बल्कि नैतिक मूल्यों और आध्यात्मिक विकास को भी बढ़ावा दिया। इन गुरुकुलों में पाठ्यक्रम को वैदिक ग्रंथों, गणित, खगोल विज्ञान, चिकित्सा, राजनीति, संगीत और नैतिकता जैसे विभिन्न विषयों की गहरी समझ विकसित करने के लिए डिजाइन किया गया था, जिससे एक सर्वांगीण शिक्षा को बढ़ावा दिया गया। इसके अलावा, इन गुरुकुलों में नियोजित शैक्षणिक तरीकों ने व्यक्तिगत ध्यान, अनुभवात्मक शिक्षा और श्रद्धेय शिक्षकों की करीबी सलाह पर जोर दिया, जिससे एक ऐसा पोषण वातावरण तैयार हुआ जो आलोचनात्मक सोच, रचनात्मकता और ज्ञान के प्रति गहरी श्रद्धा को प्रोत्साहित करता था। गुरुकुलों में छात्रों से अपेक्षा की जाती थी कि वे एक अनुशासित और संयमित जीवन व्यतीत करें, आत्म–नियंत्रण, विनम्रता और अपनी पढ़ाई के प्रति समर्पण का अभ्यास करें, जिससे महत्वपूर्ण गुणों को आत्मसात किया जा सके जो व्यक्तिगत विकास और सामाजिक सद्भाव दोनों के लिए आवश्यक थे। गुरुकुलों की विरासत भारत में आधुनिक शैक्षिक प्रथाओं को प्रभावित करती रही है, और समग्र शिक्षा, नैतिक मूल्यों और अधिक अच्छे के लिए ज्ञान की खोज पर उनका जोर ज्ञान का एक कालातीत प्रतीक बना हुआ है जो इतिहास के इतिहास में गूंजता है।

मुख्य बिंदु: गुरुकुल, वैदिक ग्रंथ, व्यावहारिक शिक्षण, आत्म–नियंत्रण, विनम्रता , आचाय, संगोष्ठी, उच्च शिक्षा।

प्राचीन भारत में गुरुकुल शिक्षा ही उच्च शिक्षा का महत्वपूर्ण अंग था। विद्यार्थी को शिक्षा के योग्य आयु प्राप्त करने पर गुरूकुल में निवास करना पड़ता था। आचार्य का शिष्य बनकर विद्यार्थी को तबतक गुरुकुल में निवास करना पड़ता था जब तक कि वह उच्चशिक्षा को ग्रहण नहीं कर लेता। अनेक प्राचीन ग्रन्थों में यह उल्लिखित है कि छात्र को सर्दैच गुरू के सम्पर्क में रहकर विद्या अध्ययन करना चाहिए। इन्हीं गुरुकुलों में छात्र के चरित्र और व्यक्तित्व का विकास होता था। छात्र को सदैव आचार्य के निगरानी में रहना पड़ता था। प्राचीन काल में विद्यार्थियों की शिक्षा व्यवस्था और शिक्षा संस्थान का तीन स्तर होता था।

1. **आचार्य कुल:** जब विद्यार्थी विद्याध्यन के योग्य हो जाता था, तब उसे माता–पिता के घर को छोड़ कर आचार्य के घर में रहना पड़ता था। इसके बाद छात्र की शिक्षा का सम्पूर्ण दायित्व आचार्य का हो जाता था।
2. **परिषद:** आचार्य कुल में रहते हुए तथा अध्ययन करते हुए छात्र जब उच्च शिक्षा की ओर अग्रसर होते गये थे तो उनके अध्ययन को परिमार्जित करने के लिए विद्यालयों द्वारा परिषदों का आयोजन होता था। इस अवसर पर आचार्य के निरीक्षण में छात्र आपस में विचार विमर्श करके अपने ज्ञान को संपुष्ट

Copyright (c) 2023: Author(s). Published by Advanced Research Publications

करते थे। इस अवसर पर बाहर के विषेशज्ञ विद्वान भी बुलाये जाते थे। जो छात्रों के अध्ययन को गति प्रदान करते थे। इसी प्रकार उच्च शिक्षा के अध्ययन की इच्छा से छात्र दूसरे आचार्य कुलों में जाकर ज्ञान प्राप्त करते थे।

3. **संगोष्ठी:** प्राचीन काल के गुरुकुलों में उच्च शिक्षा प्राप्त कर लेने के बाद संगोष्ठी का आयोजन बड़े स्तर पर किया जाता था। जो सामर्थ शाली राजा के संरक्षण में होता था। इस संगोष्ठी में भारत के प्रसिद्ध विद्वानों को आमंत्रित किया जाता था। इस प्रकार के संगोष्ठियों का वर्णन शतपथ ब्राह्मण, बृहदारण्यक उपनिषद्, वायु पुराण[1] आदि ग्रन्थों में उपलब्ध होते हैं। राजा जनक ने अश्वमेध के अवसर पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया था, जिसमें कुरू, पांचाल के सभी विद्वानों को आमंत्रित किया था।

आगे चलकर इन्हीं संस्थाओं के माध्यम से गुरुकुल संस्था का विकास हुआ। आचार्यों ने यह अनुभव किया कि ऐसे शिक्षा संस्थान होने चाहिए, जहाँ सभी प्रकार के अध्ययन की सुविधायें हों। इस प्रकार प्राचीन गुरुकुलों में उच्च शिक्षा प्रणाली का विकास हुआ। इन गुरुकुलों में सभी प्रकार के अध्ययन की सुविधा के जुट जाने से विभिन्न विषयों के आचार्य विभिन्न विषयों की शिक्षा प्रदान करते थे। इन गरूकुलों का संचालन किसी विशेष विद्वान के निर्देशन में होता था। जहाँ हजारों छात्र एक साथ शिक्षा प्राप्त करते थे। वहाँ का प्रमुख अधिकारी कुलपति होता था। सामान्यतः गुरुकुल नगरों एवं आवादियों से दूर होते थे। आगे चलकर नगरों में विद्यालयों की स्थापना के विवरण मिलते हैं। प्राचीन काल में पाटलिपुत्र, उज्जयिनी, काशी, धारा, अयोध्या, कुरुक्षेत्र, नैमिषारण्य आदि नगर उच्च शिक्षा के केन्द्र के रूप में विख्यात थे। यहाँ के गुरुकुलों के कुलपतियों एवं आचार्यों की कीर्ति को सुनकर विद्या प्राप्त करने के लिए छात्र यहाँ आते थे।

प्राचीन समय के गुरुकुलों और उनके आचार्यों का उल्लेख अनेक ग्रन्थों में प्राप्त होता है। कण्व[2], अगस्तय[3], जाबालि[4], परशुराम[5], वशिष्ठ[6], विश्वामित्र[7], शौनक[8] आदि ऋषि कुलपति के रूप में विख्यात हुए।

प्राचीन काल के गुरुकुलों में उच्च शिक्षा के विभागों का भी बटवारा किया गया था। इन गुरुकुलों के सर्वोच्च अधिकारी आचार्य (कुलपति) के अधीन तथा निरीक्षण में रहते हुए विविध विभागों के विभागाध्यक्ष तथा विषयों के विशेषज्ञ समुचित शिक्षा देते थे। ये विभाग वर्तमान के विभागों या संकायों (FACULTY) के समान थे। राधामुकुद मुकर्जी ने इन विभागों की गणना निम्नलिखित प्रकार से की हैं।[9]

1. **अग्नि स्थानः** अग्नि स्थान यज्ञ शाला को कहते थे। जहाँ विद्यार्थी सामूहिक रूप से यज्ञ, अग्नि की उपासना आदि करते थे।
2. **ब्रह्मस्थानः** यहाँ वैदिक साहित्य के अन्तर्गत वैदिक संहिताओं, ब्राह्मण ग्रन्थो, आरण्यको, उपनिषदों और वेदांगों का अध्ययन होता था।
3. **विष्णु स्थानः** यहाँ व्यवहारिक विद्याओं के अंतर्गत दण्डनीति, अर्थनीति और वार्ता (वाणिज्य–उद्योग)की शिक्षा दी जाती थी।
4. **महेन्द्र स्थानः** इस विभाग में सैनिक शिक्षा का प्रबन्ध था। यहाँ सेनाओं के संचालन तथा विविध प्रकार के आयुधों की शिक्षा दी जाती थी।
5. **विवस्वत स्थानः** इस विभाग में ज्योतिष विद्या के अंतर्गत ज्योतिष, फलित ज्योतिष, गणित आदि विषयों की शिक्षा दी जाती थी।
6. **सोम स्थानः** इस विभाग में वनस्पति विज्ञान का अध्ययन किया जाता था। इसमें उद्यान, वन. औषधि, आदि से सम्बन्धित विषय पढ़ाये जाते थे।
7. **गरूड़ स्थानः** इस विभाग में वाहनों तथा परिवहन से सम्बन्धित विषयों की शिक्षा दी जाती थी। प्राचीन काल में अनेक प्रकार के वाहनों का प्रयोग किया जाता था। जैसे विमान, नौका, रथ, विविध प्रकार की बैल गाड़ियों आदि। इसी प्रकार परिवहन के लिए सड़कों, पुलों, बाधों आदि का भी निर्माण करना पड़ता था। गरुड़ स्थान में इन सब विद्याओं के अध्ययन तथा क्रियात्मक प्रशिक्षण का प्रबन्ध था।
8. **कार्तिकेय स्थानः** यहाँ सैनिक संगठन से सम्बन्धित विषयों की शिक्षा दी जाती थी। इस विभाग में सेना के विभिन्न संगठन किस प्रकार बनाये जाये। व्यूह रचना किस प्रकार की जाये, शत्रुओं के अभियान योजनाओं को जानने तथा स्वयं अभियान करने आदि से सम्बन्धित विषयों की शिक्षा यहाँ दी जाती थी।

प्राचीन भारत के गुरुकुलों में उच्चषिक्षा के विषयों को चार भागों में विभक्त किया गया था। ये विषय धर्म, कला, शिल्प और विज्ञान थे। प्राचीन गुरुकुलों में मुख्यतः चार वेदों (ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद), छः वेदागों (शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरूक्त, छन्द, ज्योतिष), चार उपवेदों (आयुर्वेद, धनुर्वेद, अर्थवेद, गान्धर्ववेद), धर्म सूत्रों, स्मृति ग्रन्थों, पुराण आदि विषयों का अध्ययन कराया जाता है। छान्दोग्य उपनिषद् सप्तम् अध्याय के प्रथम खण्ड में गुरुकुलों में पढ़ाये जाने वाले विषयों का उल्लेख है, जिसमें वेद, इतिहास, पुराण, व्याकरण, निधि (खानों की विद्या), वाकोवाक्य (तर्क शास्त्र), एकायन (नीति शास्त्र), देव विद्या, ब्रह्मविद्या, भूत विद्या (प्राणि विज्ञान), क्षत्रविद्या (सैन्य विज्ञान), नक्षत्र विद्या, (ज्योतिष), सर्प विद्या, देवजन विद्या (शिल्प और ललित कलाए), आदि प्रमुख विषय थे।

इसी प्रकार रामायण और महाभारत में उच्च शिक्षा से सम्बन्धित अनके विषयों का वर्णन किया गया है, जिनमें धनुर्वेद, वेद, नीतिशास्त्र, गजशास्त्र, विविध कलाओं, आलेख्य, लेख्य, गन्धर्व विद्या और राजनीति आदि प्रमुख विषय है।[10] महाभारत में शब्द शास्त्र, 64 कलायें, आयुर्वेद, वेद, इतिहास, भाष्य, नाटक, काव्य, कथा, आख्यायिका और अति महत्वपूर्ण विषय सैन्य शिक्षा आदि का उल्लेख है।

इसी प्रकार कौटिल्य ने अर्थशास्त्र में शिक्षा के विषयों चार भागों आन्वीक्षिकी (दार्शनिक विषय), त्रयी (ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद), वार्ता (अर्थोपार्जन सम्बन्धी विद्या), दण्डनीति (राज्य प्रशासन)मे विभाजित किया है।[11] जिनका ज्ञान प्राप्त करने के बाद व्यक्ति विद्वानों की श्रेणी में गिना जाता था। मनु ने भी विद्यालयों में इसी प्रकार के विषयों को पढ़ाने का उल्लेख किया है।

ISSN: 2456-0510
DOI: https://doi.org/10.24321/2456.0510.202302

महाकवि बाण ने कादम्बरी कथा में अनेक प्रकार की विद्याओं के अध्ययन का उल्लेख किया है। जिनका अध्ययन नालन्दा आदि विश्वविद्यालयों (सातवी शताब्दी ई०) में किया जाता था।

प्राचीन भारत के विश्वविद्यालयों में उच्चशिक्षा सम्बन्धित विषयों में ज्योतिष गणित आयुर्वेद, धनुर्वेद, रसायन विज्ञान, पशुविज्ञान, वनस्पति विज्ञान, यंत्र विज्ञान, विमान विज्ञान, मनोविज्ञान, दण्डनीति, कृषि, पशुपालन वाणिज्य आदि की शिक्षा दी जाती थी। विदेशी यात्री भी भारत के प्रमुख विश्वविद्यालयों में इन विषयों का अध्ययन कर उच्च शिक्षा प्राप्त करते थे। इनका उल्लेख अनेक शास्त्रों में मिलता है।

प्राचीन भारत में गुरुकुलों के विकास क्रम में अनेक विश्वविद्यालयों का भी उल्लेख प्राप्त होता है। यहाँ के प्रधान आचार्य को कुलपति कहा जाता था। कुलपित उसको कहते थे, जो दस हजार छात्रों के भोजन, वस्त्र, निवास, अध्ययन का प्रबन्ध करने में समर्थ हों। कुछ ऐतिहासिक विश्वविद्यालय जिनमें तक्षशिला विश्वविद्यालय, नालन्दा विश्वविद्यालय, विक्रमशिला विश्वविद्यालय, उड्डयंतपुर विश्वविद्यालय, वलभी विश्वविद्यालय, जगद्दल विश्वविद्यालय, बेलग्राम विश्वविद्यालय, धारा विश्वविद्यालय आदि प्रमुख है जहाँ अनेक विषयों की पढ़ाई होती थी तथा यहीं से अनेक विद्वान उच्च शिक्षा प्राप्त करके अनेक देशों में अपनी ज्ञान रश्मि फैलायी।

प्राचीन भारत में शिक्षा के स्वरूप और विकास पर भारतीय साहित्यों के साथ–साथ विदेशी यात्रियों के संस्मरणो से विशेष प्रकाश पड़ता हैं। इनमें चीनी यात्री फाह्यान, हवेनसांग तथा इत्सिंग का नाम उल्लेखनीय है। प्राचीन भारत में उच्च शिक्षा के अंतर्गत धार्मिक, दार्शनिक, साहित्यिक शिक्षा के साथ–साथ औद्योगिक और तकनीकी शिक्षा का भी प्रसार हुआ। इनमें आयुर्वेद विज्ञान सर्वोपरि था। हमारी प्राचीन शिक्षा पद्धति के आधार पर नयी शिक्षा व्यवस्था आधारित है लेकिन विदेशी शासन ने हमारी हमारी परम्परागत शिक्षा नष्ट किया और अपनी नयी शिक्षा व्यवस्था को थोपने का प्रयास किया। प्राचीन शिक्षा व्यवस्था में ऐसे उच्च तकनीकी का प्रयोग दिखाई देता है जिसे अभी खोजा नहीं जा सका है। इस प्रकार हमारे प्राचीन साहित्यों में उच्च शिक्षा से सम्बन्धित ज्ञान की भरमार है, जिनपर अन्वेषण की आवश्यकता है। यदि वर्तमान में भी उच्च शिक्षा के अंतर्गत आधुनिक विज्ञानों के साथ–साथ प्राचीन विज्ञानों और कलाओं के अध्ययन को प्रोत्साहन दिया जाय और उन तकनीकों पर निरन्तर शोध किया जाय तो भारत विश्व में अग्रणी होगा।

निष्कर्ष

इस शोध पत्र में लेखक ने प्राचीन भारतीय गुरुकुलों में उच्च शिक्षा की प्रकृति एवं विकास पर उत्कृष्ट प्रकाश डाला है। आज हमारी शिक्षा प्रणाली की नींव प्राचीन शैक्षिक प्रथाओं पर आधारित है, फिर भी औपनिवेशिक शासन ने हमारी पारंपरिक प्रणाली को बाधित कर दिया और अपनी आधुनिक शैक्षिक संरचना थोप दी। प्राचीन भारतीय गुरुकुलों की शिक्षा प्रणाली ने प्रौद्योगिकी के एक परिष्कृत स्तर का प्रदर्शन किया है। हमारे प्राचीन साहित्य में, उच्च शिक्षा से संबंधित ज्ञान का खजाना है जो आगे की खोज की प्रतीक्षा कर रहा है। यदि हम उच्च शिक्षा के दायरे में प्राचीन विज्ञान और कलाओं के साथ–साथ आधुनिक विज्ञान के अध्ययन को भी शामिल करें, साथ ही उन तकनीकों पर लगातार शोध करें, तो भारत निस्संदेह एक वैश्विक नेता के रूप में उभरेगा। उच्च शिक्षा के दायरे में आधुनिक और प्राचीन विज्ञान और कला दोनों के अध्ययन को प्रोत्साहित करके, साथ ही इन क्षेत्रों में लगातार शोध करके, भारत विश्व मंच पर सबसे आगे हो सकता है।

संदर्भ

1. मुकर्जी, राधाकुमुद, एंश्येंट इण्डियन एजुकेशन, पृ० 137
2. महाभारत आदि पर्व, 215.103, अग्निपुराण 115.10
3. उत्तर राम चरित, 2.3
4. कौमुदी महोत्सव, पृ० ३
5. बाल रामायण, 2.3
6. कालिदास, रघुवंश, प्रथम सर्ग।
7. अनर्धराधव, 2.45
8. मुकर्जी, राधाकुमुद, पूर्वोक्त, पृ० 171.
9. वही, पृ० 333.
10. रामायण, 1.10.27 2.2.6
11. कौटिल्य, अर्थशास्त्र. 1.1.2

ISSN: 2456-0510
DOI: https://doi.org/10.24321/2456.0510.202302